

## ध्यान और ज्ञान की साधनाएँ

मनुष्य को अल्पज्ञता से महाविज्ञता तक पहुँचाने के लिए ध्यान-ज्ञान-साधना को स्वीकार करना चाहिए।

ध्यान साधना का मतलब आनापानसति-विपस्सना है। ज्ञान साधना का मतलब यह जानना है कि अपने कर्मों की जिम्मेदारी मुझ पर ही है मुझे अपने दैनिक जीवन में सावधान रहना है। प्रतिदिन एक घण्टा अवश्य ध्यान की साधना करें। ज्ञान साधना को हर पल याद रखें।

जगत में तीन प्रकार के लोग हैं। एक, जो साधना में नहीं हैं, दूसरे जो साधना में हैं और तीसरे वे जो सिद्ध लोग हैं। जो साधना में नहीं हैं, उन्हें तुरन्त साधक बनना चाहिए। जो साधना में है, वे अवश्य सिद्ध हो जाएँगे और जो सिद्ध पुरुष हैं, वे सबको साधक बनाएँ। प्रत्येक को सिद्ध पुरुष बनना है।

प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान-ज्ञान को प्राप्त करने में लीन होना है। सबको अर्थात् बच्चे-बड़े, स्त्री-पुरुष, साक्षर-निरक्षर सभी को ध्यान और ज्ञान योगी बनाना ही पिरामिड स्पिरिचुअल मास्टर्स का एकमात्र लक्ष्य है।